आचार्य
श्री नरेंद्र मोदी

ACHARYA (CHANCELLOR)
SHRI NARENDRA MODI

उपाचार्य
प्रोफेसर विद्युत चक्रवर्ती

UPACHARYA (VICE-CHANCELLOR)
PROF. BIDYUT CHAKRABARTY

विश्वभारती
VISVA-BHARATI

(Established by the Parliament of India under
Visva-Bharati Act XXIX of 1951
Vide Notification No. : 40-5/50 G.3 Dt. 14 May, 1951)

संस्थापक
रवीन्द्रनाथ ठाकुर

FOUNDED BY
RABINDRANATH TAGORE

शांतिनिकेतन - 731235
SANTINIKETAN - 731235
जि.वीरभूम, पश्चिम बंगाल, भारत
DIST. BIRBHUM, WEST BENGAL, INDIA
फोन Tel: +91-3463-262 451/261 531
फैक्स Fax: +91-3463-262 672
ई-मेल E-mail : vice-chancellor@visva-bharati.ac.in
Website: www.visva-bharati.ac.in

सं./No._____ दिनांक/Date._____

मेरा अंतिम संदेश

29 अगस्त, 2020

विश्वभारती से पल्लवित-पुष्पित होने वाले मेरे सहकर्मियों, छात्रों और अन्य हितधारकगण!

विश्वभारती जल्दी ही नाम के अनुरूप विश्वभारती होने जा रही है। गुरुदेव टैगोर शांतिनिकेतन में विकसित किए गए मॉडल का प्रसार करने के लिए उत्सुक थे, लेकिन यह संभव नहीं हुआ; संभवत: इसलिए कि पहले कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया।टैगोर जैसा चाहते थे उसे विश्वभारती अधिनियम,1951 में स्पष्ट किया गया था।इसके सूत्रपात में, प्रथम कुलाधिपति, पंडित जवाहरलाल नेहरू (भारत के पहले प्रधानमंत्री) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस प्रकार अधिनियम, 1951 के उपभाग 6 (7) के प्रावधान से स्पष्ट है कि

" विश्वविद्यालय को अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु आवश्यकतानुसार भारत में किसी भी स्थान पर परिसर, विशेष केंद्र, विशेष प्रयोगशाला या अनुसंधान और शिक्षण के लिए अन्य इकाई स्थापित करने का अधिकार होगा।"

माननीय कुलाधिपति, श्री नरेन्द्र मोदी,भारत के प्रधानमंत्री की व्यक्तिगत दिलचस्पी से अब रामगढ़, उत्तराखंड में विश्वभारती का एक दूरस्थ परिसर स्थापित करना संभव हो गया है। माननीय कुलाधिपति द्वारा व्यक्त किए गए विचार को भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री, श्री रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा मूर्त रूप दिया गया जिन्होंने परियोजना के लिए जो हर स्तर पर डीपीआर (विस्तृत परियोजना रिपोर्ट) तैयार करने में मुख्य भूमिका निभाई। इसके अलावा, रामगढ़ में एक दूसरा परिसर स्थापित करने का विचार विशेष रूप से कवि को श्रद्धांजलि है, क्योंकि यहीं गुरुदेव को उनकी *गीतांजलि* लिखने का विचार आया जिसे उनके नोबेल उद्धरण में संदर्भित किया गया था। यह उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है। टैगोर अपनी बेटियों को विशेषकर रेणुका को उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए वहाँ ले गए थे। इसका मतलब है कि इस पहाड़ी शहर का उनके दिल में एक विशेष स्थान था।

गीतांजलि की योजना के अलावा गुरुदेव ने रामगढ़ में रहते हुए अपने कुछ सबसे प्रसिद्ध गीत भी लिखे, जो शहर की स्थिति को उनकी बौद्धिक प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण स्रोत मानते हैं। वहाँ, नैसर्गिक प्रकृति की छटा में डूबे, कवि के लिए अपने परिवेश के साथ आत्मीय संबंध बनाना शायद आसान था। रामगढ़ गुरुदेव के लिए पूरी तरह से अलग परिदृश्य था क्योंकि उन्होंने अपना अधिकांश समय पूर्वी बंगाल में नदी किनारे बिताया था, जहाँ उनकी जमींदारी संपत्ति थी।

रवींद्रनाथ टैगोर और रामगढ़

रबींद्रनाथ टैगोर को पहाड़ों पर जाने का शौक था। अपनी आत्मकथा *जीवन स्मृति* में, उन्होंने अपने पिता महर्षि देबेंद्रनाथ टैगोर के साथ हिमालय में अपने बचपन की यादों का वर्णन किया है। 1903 में, उन्होंने अल्मोड़ा का दौरा किया, अपनी बीमार बेटी रेणुका के साथ किराए के घर में रहे।उन्हें उम्मीद थी कि हिमालय के प्रदूषण-मुक्त वातावरण में रहने से रेणुका स्वस्थ हो जाएगी।दुख की बात है कि कुछ महीनों बाद बारह वर्ष की उम्र में कलकत्ता में यक्ष्मा से उसकी मृत्यु हो गई।

अपने पुत्र रथिंद्रनाथ के आग्रह पर, 1913 में, गुरुदेव टैगोर ने रामगढ़ में दस हजार रुपये में विशाल बगीचा के साथ विनोदगृह खरीदा जो नैनीताल और अल्मोड़ा के बीच स्थित था। बगीचे में सेब, चेरी, अमरूद और आड़ू आदि के पेड़ थे, जिसके आधार पर गुरुदेव ने घर का नाम ' स्नो व्यू गार्डन ' से बदलकर *हैमंती* रखा।

8 मई 1914 को अपने 53वें जन्मदिन पर, टैगोर ने अपने सहयोगी विलियम पीयरसन को लिखा, "मैं अगले रविवार को रामगढ़ जाने के लिए तैयारी कर रहा हूं"। दो दिन बाद, कवि ने अंग्रेजी पादरी और मित्र सी.एफ. एंड्रयूज को गर्मी की छुट्टी के दौरान रामगढ़ में आमंत्रित करने के लिए लिखा कि -

"आप मेरे साथ पहाड़ी में कब रहने आ रहे हैं? मुझे लगता है कि आप बहुत परेशान हैं और आपको आराम की बहुत जरूरत है। मैं आपको इस छुट्टी के दौरान काम नहीं करने दूँगा। हमारे पास अपनी छुट्टियों के लिए कोई विशेष योजना नहीं होनी चाहिए। इससे पहले कि आलस्य हमारे ऊपर हावी हो जाए, आइए हम उन्हें पूरी तरह से मजे करें "।

कवि ने उसी दिन अपनी बहू,प्रतिमा; दामाद,नागेंद्रनाथ; बेटी, मीरा और दो घरेलू सहायकों के साथ रामगढ़ के लिए चल दिए। गंतव्य तक पहुंचने के लिए खतरनाक यात्रा के बावजूद, गुरुदेव टैगोर को रामगढ़ जल्दी ही भा गया। उस समय काठगोदाम से रामगढ़ जाने वाली सोलह मील की सड़क मोटर से जाने योग्य नहीं थी। परिवहन के दो साधन उपलब्ध थे- घोड़ा और दांडी (चार लोगों द्वारा ढोई जाने वाली एक हाथ-कुर्सी)। टैगोर ने एंड्रयूज को 14 मई को लिखा -

"यहाँ मुझे लगता है, मैं उस जगह पर आया हूँ जिसकी मुझे पूरी दुनिया में सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। ... आज मैं परमपिता हिमालय के सामने घुटने टेककर माफी माँग रहा हूँ कि मैं अब तक शक के साये में आपसे दूर रहा।ऐसा लगता है मानो पहाड़ियों के चारों तरफ पन्ना से भरा जलयान शांति और सूरज की किरण के साथ उभरती हो। एकांत एक फूल की तरह है जो हृदय में शहद रखते हुए अपनी सुंदर पंखुड़ियों को फैलाता है।मेरा जीवन पूर्ण है। यह अब खंडित या बिखरा हुआ नहीं है।"

कवि द्वारा रामगढ़ में लिखे गए गीत में खुशी गूँजती है:

"ई लोभिनु सोंगो तोबो सुंदर हे सुंदर"।

टैगोर ने रामगढ़ में कई गीत लिखे जो इस प्रकार हैं: -

दूजोने एक होए जाओ, माथा राखो अकेर पाए (गीत)

हैमंती (लघु कथा)

आषाढ़ (निबंध)

17 मई: चोरोनो धोरोते दियो गो अमारे (गीत)

18 मई: गान गेये के जानाय अपोन बेदना (गीत)

19 मई: एरे भिखारी सजाए कि रोंगो तुमि कोरिले (गीत)

एबार जे ओइ एलो शोरबोनाशे गो (कविता)

20 मई: अमरा चोलि समुखपाने (कविता)

सोंध्या होलो गो (गीत)

24 मई: एई तो तोमर आलोकेधेनु

26 मई: तोमर शंखो धुलाय पोरे (कविता)

1 जून: फूल फूटेछे मोर आशोनेर दाइने बाएँ, पुजार छाये

17 मई, 1914 को गुरुदेव टैगोर ने अपने पिता के 98 वें जन्मदिन पर रामगढ़ में प्रार्थना की और एंड्रयूज को लिखा, "यह एक नए आध्यात्मिक जन्म के प्रतीक की तरह लगता है। मैं बड़ी उम्मीद से भरा हूँ जबकि इसमें पीड़ा भी बहुत है।" रथिन्द्रनाथ टैगोर, कवि अतुल प्रसाद सेन, शांतिनिकेतन स्कूल के कई छात्र और शिक्षक तथा सी.एफ. एंड्रयूज यादगार अवकाश बिताने के लिए रामगढ़ में कवि के साथ थे। रथिन्द्रनाथ, युवा आकांक्षी

चित्रकार मुकुल चंद्र डे के साथ जंगली जानवरों का शिकार करने के लिए बगल के जंगल में गए और घर लौट आए।वे डरे हुए थे एवं उनके चेहरे पर अजीब मुस्कान थी।रथिन्द्रनाथ ने अपनी आत्मकथा पितृ-स्मृति में रामगढ़ की यात्रा पर एक छोटा संस्मरण लिखने के अलावा रामगढ़ में शिकार के अपने अनुभव के बारे में एक छोटी कहानी लिखी है। उन्होंने लिखा कि कैसे एक स्थानीय व्यक्ति गंभीर और असह्य शारीरिक मरोड़ की लंबी बीमारी से पीड़ित था। गुरुदेव टैगोर द्वारा होम्योपैथिक दवाओं से इलाज करने के बाद वह ठीक हो गए। इस सफलता ने तुरंत उन्हें रामगढ़ में डॉक्टर के रूप में लोकप्रिय बना दिया और रोगियों ने इलाज के लिए कवि के पास आना शुरू कर दिया। रामगढ़ में टैगोर का घर एक निर्जन इलाके में था जिसके आसपास कुछ ही परिवार थे। उनमें से, एक सेवानिवृत्त सिविल सेवक स्वीटेनहम का परिवार टैगोर परिवार का करीबी बन गया और उन्हें अक्सर चाय पर बुलाते थे। मुकुल डे याद करते हैं कि टैगोर ने रामगढ़ में तीन पेंसिल स्केच बनाए। लगभग एक दशक बाद, गुरुदेव टैगोर सत्तर साल की उम्र में एक चित्रकार के रूप में उभरे। रामगढ़ में रहते हुए, कवि ने अपनी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए इलाहाबाद के भारतीय प्रेस के मालिक चिन्तामणि घोष के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। रामगढ़ में एक यादगार गर्मी की छुट्टी बिताने के बाद, रबींद्रनाथ ने घर लौटते समय दांडी के बजाय सी.एफ. एंड्रयूज के साथ काठगोदाम तक (हिमालय की तलहटी में) 16 किलोमीटर की पैदल यात्रा की।

रामगढ़ ने कवि के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। इतना गहरा कि टैगोर को इस जगह और यहाँ के लोगों के साथ गहरा जुड़ाव हो गया। 8 नवंबर 1914 को अपने सचिव अजित कुमार चक्रवर्ती को एक पत्र में टैगोर ने लिखा, "रामगढ़ में हमारे स्कूल की एक शाखा स्थापित करने के लिए विचार-विमर्श के लिए मैं यहाँ [कलकत्ता में] हूँ।" यह स्पष्ट नहीं है कि रामगढ़ जैसे दूरस्थ पहाड़ी स्टेशन में उनके शांतिनिकेतन स्कूल की एक शाखा शुरू करने में उनकी प्रेरणाएँ क्या थीं। अल्मोड़ा की तरह, उस समय रामगढ़ लोगों के लिए प्रकृति के सानिध्य में बीमारी से उबरने के लिए एक लोकप्रिय स्थल था। टैगोर के जीवनी लेखक, प्रशांत कुमार पाल ने विश्वभारती की एक शाखा के रूप में स्थापित करने की संभावना को खारिज नहीं किया है, जहां टैगोर के शांतिनिकेतन स्कूल के अस्वस्थ छात्रों को गंभीर बीमारी से उबरने के लिए बदलाव के लिए लाया जा सकता है। टैगोर ने एक अन्य पत्र में 15 नवंबर 1914 को सी.एफ. एंड्रयूज को लिखा, “रामगढ़ का मौसम सर्दियों के दौरान अनुकूल नहीं रहता,और इसी से मुझे प्रेरणा मिलती है कि मैं वहाँ जाकर कुछ महीने शांत वातावरण का लुत्फ उठाऊँ क्योंकि इसके बाद मौसम गर्म और आरामदायक होने लगता है और भीड़ बढ़ने लगती है। जो भी हो, मुझे संवाद की

पहुंच से परे रहना चाहिए। मैं आज रात,18 नवंबर (बुधवार) को बॉम्बे मेल से बोलपुर जा रहा हूं। रथिंद्रनाथ मेरे साथ जाएगा और *बहू* भी साथ चल सकती है।

टैगोर ने 17 नवंबर को एंड्रयूज को फिर लिखा, "मैं आज रात रामगढ़ के लिए निकल रहा हूं और यह नहीं जानता कि मैं कब वापस आऊंगा। मैं इसके लिए अपने *जीवन देवता* पर छोड़ रहा हूँ।मुझे उम्मीद है कि वह मुझे तब तक पहाड़ियों में रहने देगा जब तक कि बर्फ पिघल नहीं जाता और हवा मैदानी इलाकों की ओर चलने नहीं लगती"। रामगढ़ के पीड़ादायी ठंडे मौसम ने टैगोर को अपनी योजनाओं को बदलने और रामगढ़ से आगरा आने के लिए उद्वेलित किया। 30 नवंबर को कवि ने एंड्रयूज को लिखा, "हिमालय ने इस बार मेरा गर्मजोशी से स्वागत नहीं किया और इस बार हम वहाँ से मन मसोसकर लौटे। हमारे घर की स्थिति सर्दियों के लिए बिल्कुल अनुकूल नहीं है। दोपहर के बाद वहाँ धूप नहीं आती और शाम होने से पहले ठंढ लगने लगती है।" टैगोर रामगढ़ में और जमीन खरीदना चाहते थे। एंड्रयूज इसके लिए व्यवस्था करने इलाहाबाद गए। इलाहाबाद में उनके आगमन पर, 23 नवंबर को गवर्नमेंट हाउस इलाहाबाद से एंड्रयूज ने टैगोर को सूचित किया कि वे यहाँ "रामगढ़ के ऊपर के पठार के बारे में सौदा करने के लिए सर जेम्स मेस्टन के साथ रहने के लिए आए थे क्योंकि हमेशा व्यस्त लोगों के साथ काम करने का यह सबसे अच्छा तरीका है और वह भी इसे पाने के लिए उत्सुक है। उसने सोचा कि यह मुश्किल नहीं होगा, हालांकि उसने यह भी चेतावनी दी कि जंगल के लोग विरासत के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं।लेकिन स्थानीय गवर्नर सर्वशक्तिमान तानाशाह हैं, और वह निश्चिंत हैं कि हम कामयाब होंगे "।

अपनी मृत्यु के चार साल पहले 1937 में, टैगोर ने अल्मोड़ा में एक महीने से अधिक समय बिताया था। यह पता नहीं चलता कि उस यात्रा के दौरान उन्होंने रामगढ़ और अपने घर 'हैमंती' का दौरा किया या नहीं। रामगढ़ में अपने स्कूल की शाखा शुरू करने की उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई। बहरहाल, रामगढ़ के बारे में उनके प्रशंसात्मक टिप्पणियों से पता चलता है कि वह हिमालय के इस स्थान से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि प्रथम विश्व युद्ध शुरू होने पर कवि फिर से रामगढ़ आ गए ताकि शांत और एकांत वातावरण में अपने विचार को रचनात्मक लेखन में व्यक्त कर सके।

रामगढ़, उत्तराखंड में दूसरा विश्वभारती परिसर

गुरुदेव रामगढ़ में ब्रह्मचर्य विद्यालय की एक शाखा स्थापित करना चाहते थे, जो उनके जीवनकाल में संभव नहीं हुआ। अब, रामगढ़ में विश्वभारती का दूरस्थ परिसर बनने के साथ,उनका सपना साकार होने जा रहा है।

यह विश्वभारती के ज्ञान सृजन और प्रसार के लिए वैश्विक मंच होने के गुरुदेव के विचार को साकार करने की दिशा में भी एक कदम है। हमारा प्रयास सफल नहीं होता यदि हमारे प्रस्ताव रखते ही हमारे माननीय कुलाधिपति,श्री नरेंद्र मोदी,भारत के प्रधान मंत्री और श्री रमेश पोखरियाल निशंक,माननीय शिक्षा मंत्री,भारत सरकार ने इसे आगे न बढ़ाया होता। माननीय शिक्षा मंत्री की व्यक्तिगत दिलचस्पी से हमारे लिए (क) क्षेत्र की विशिष्ट आवश्यकताएँ और (ख) शिक्षा की प्रक्रिया को हर्ष और आनंद के स्रोत बनाने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करना संभव हुआ । 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप,डीपीआर,शिक्षा प्रणाली शिक्षार्थियों के लिए सार्थकता को ध्यान में रखकर तैयार की जाती है ताकि "भारतीय लोकाचार में निहित तत्व जो भारत को बदलने में प्रत्यक्ष रूप से योगदान देता है, एक समान और जीवंत प्रबुद्ध समाज में, सभी को उच्च-गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करके, और इस तरह भारत को वैश्विक स्तर पर ज्ञान के क्षेत्र में अव्वल स्थान दिलाएगा" , को साकार कर सके। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, पृष्ठ सं. 6) ।

अनुभव कहता है कि शिक्षा राष्ट्र-निर्माण का एक शक्तिशाली उपकरण है। 1921 में विश्वभारती की स्थापना करके, गुरुदेव टैगोर ने कलकत्ता के भाग-दौड़ की महानगरीय वातावरण से दूर शिक्षा का एक केंद्र सफलतापूर्वक विकसित किया। यह संयोग की बात नहीं थी कि महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर ने बोलपुर में अपना शांतिनिकेतन आश्रम बनाया। वे एक ऐसे स्थान पर रहना चाहते थे जो मशीनी शहरीकरण से मुक्त हो जो कलकत्ता की औपनिवेशिक राजधानी की विशेषता थी। गुरुदेव टैगोर ने भी वैसा ही सोचा। वह हिमालय में शिक्षा का एक और केंद्र शुरू करना चाहते थे जो एक ही अवधारणा पर आधारित एवं शहरी व्यवधान से दूर हो। यह बहुत खुशी की बात है कि विश्वभारती का सपना सच करने के लिए भारत सरकार के विशेष सहयोग से माननीय कुलाधिपति श्री मोदी जी और माननीय शिक्षा मंत्री,श्री पोखरियाल जी नियमित रूप से परियोजना की सफलता के लिए प्रशासन का अनुगमन करते रहे। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, हमारा विचार था कि उत्तराखंड के रामगढ़ में दूरस्थ परिसर का तब तक कोई सार्थक उद्देश्य नहीं होगा जब तक यह शिक्षार्थियों को स्थानीय और वैश्विक दोनों चुनौतियों का सामना करने और राष्ट्र-निर्माण में प्रभावी योगदान देने के लिए तैयार न करे। तदनुसार,रामगढ़ में विश्वभारती परिसर चार शैक्षणिक केंद्रों के साथ शुरू होगा, जो हैं: (क) सामाजिक विज्ञान और ग्रामीण विकास केंद्र, (ख) भाषा केंद्र, (ग) लोक नीति और सुशासन केंद्र और (घ)) हिमालयी अध्ययन केंद्र। कई सहयोगियों और अन्य हितधारकों के साथ कई विचार मंथन सत्रों में गहन चर्चा के बाद, एक आम सहमति बनी जिसके आधार पर उपरोक्त चार केंद्र खोलने का निर्णय लिया गया। जिन लोगों ने विचार-विमर्श में भाग लिया था उनके बीच इस बात पर भी सहमति हुई कि विश्वविद्यालय लचीले प्रकृति के होंगे और

नियमों के अनुसार बनाए जाएंगे ताकि शिक्षार्थियों की बेहतर सेवा हेतु माँग के अनुसार केंद्र खोले जा सकें। हम माननीय मंत्री, श्री पोखरियाल जी के आभारी हैं कि उन्होंने अपने बहुमूल्य सुझाव दिए जिससे हमें इन सार्थक विचारों को डीपीआर में शामिल करने में मदद मिली। चूंकि यह एक चालू परियोजना होगी, इसलिए हम उन सामाजिक-आर्थिक उद्देश्यों के विस्तार के लिए मूल्यवान विचार और सुझाव की आशा करते हैं जो गुरुदेव टैगोर के मन में थे जब उन्होंने हिमालय में एक ब्रह्मचर्य विद्यालय की कल्पना की थी।

मैं उन पाठ्यक्रमों पर विचार प्रकट करना चाहता हूँ जो प्रत्येक केंद्र प्रदान करेगा। सबसे पहले, सामाजिक विज्ञान और ग्रामीण विकास केंद्र में (क) सामाजिक कार्य में एमए और (ख) ग्रामीण विकास में एमए में एकीकृत डिग्री होगी। दो केंद्रों के अलावा, दो उपकेंद्र होंगे: एक समावेशी विकास और औचित्य पर विशेष पाठ्यक्रमों के लिए और दूसरा ग्रामीण विकास पर विशिष्ट कार्यक्रमों पर जो कि हमारे पास ' ग्रामीण विस्तार केंद्र 'नाम के तहत श्रीनिकेतन परिसर में हैं। दूसरे, भाषा केंद्र में संस्कृत, हिंदी और अन्य संकटग्रस्त भाषाओं के विभाग होंगे जो लोगों की रुचि की कमी के कारण तेजी से घट रहे हैं। हमें इन लुप्तप्राय भाषाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि उनके लुप्त होने के साथ, हम भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता के इतिहास को भी खो देंगे, जो कि मानव के उन वर्गों द्वारा बड़े पैमाने पर उपलब्ध और संरक्षित हैं जो भारत के उपनिवेशवाद और उसके बाद के राष्ट्र दोनों के द्वारा खुलासा नहीं किए जाने के कारण हाशिए पर रह गए हैं।तीसरा, लोक नीतियों और शासन के रूपों और प्रकृति के अध्ययन में बढ़ती रुचि को देखते हुए, सेंटर फॉर पब्लिक पॉलिसी एंड गुड गवर्नेंस इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र और लोक प्रशासन जैसे क्षेत्रों के शिक्षार्थियों को आकर्षित करेगा। केंद्र प्रत्येक विषयों में एक एकीकृत एमए और लोक नीति और शासन में एकीकृत एमए की डिग्री प्रदान करेगा, जो अंतर-विषयक आधार पर डिग्री होगी क्योंकि पाठ्यक्रम उपर्युक्त क्षेत्रों से संबंधित विशेषज्ञों द्वारा पढ़ाया जाएगा । अंत में, हिमालयी क्षेत्र संबंधी ज्ञान के भंडार को समझने और सृजित करने की कोशिश करते हुए, हिमालयन स्टडीज का केंद्र भूगोल, इतिहास और हिमालय के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक वातावरण के अध्ययन के उद्देश्य से भिन्न होगा। यह स्थानीय लोगों की प्रकृति, समाज और विशिष्ट व्यवहार व लक्षण जो पारंपरिक अकादमिक अध्ययन की अवधारणा से समझ में नहीं आ सकते हैं। इसका उद्देश्य सैद्धांतिक उपकरण भी सृजित करना है जो नीति निर्माताओं और शासन में शामिल लोगों को हमारी सदियों पुरानी सामाजिक-आर्थिक परंपराओं की रक्षा के लिए प्रभावी नीतियों को तैयार करने में मदद करेगा जो एक सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से विविध एवं भावनात्मक रूप से जुड़े भारत के समेकन के लिए अनुकूल हैं।

रामगढ़, उत्तराखंड में दूसरा परिसर, गुरुदेव टैगोर की एक दीर्घकालीन प्रयोग की पराकाष्ठा है जो विश्वभारती की शाखाओं का विस्तार करके ज्ञान सृजन और प्रसार करने और ज्ञान सृजित करने की एक विशिष्ट अवधारणा के रूप में फैलाने की उनकी हार्दिक इच्छा थी। रटंत विद्या और शिक्षा को चिन्हित किए जाने के विपरीत, गुरुदेव ने शिक्षा के लिए एक विस्तृत योजना बनाई, जिस पर हमने 2020 की नई शिक्षा नीति में बल दिया है। उन भारतीय शिक्षार्थियों में अलगाव की भावना के कारण, जिन्होंने बड़े पैमाने पर भारतीयों के साथ ब्रिटिश युग की अंग्रेजी शिक्षा को खुशी से स्वीकार किया, कवि ने उपनिवेशवाद के दौरान विकसित होने वाली शिक्षा पद्धति को पूरी तरह से नकारा क्योंकि वह पूरी तरह मशीनी और विशेष रूप से नासमझ भारतीयों के औपनिवेशिक फायदे के लिए था। यह सच है कि स्वतंत्र भारत में दृश्य मूल रूप से नहीं बदले हैं, संभवत: शिक्षा की इस उत्पीड़क प्रणाली के समर्थन में बुरी तरह से उलझी मानसिकता के कारण, जो देश के बाकी लोगों की कीमत पर शासकों को लाभ देने वाले समीकरणों को बनाए रखने के लिए बहुत कुछ करता है।

परिसर में पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप (पीपीपी) मोड में समृद्ध अस्पताल

वर्तमान विश्वभारती प्रशासन की दूसरी महत्वपूर्ण चिंता परिसर में एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल का निर्माण करना है। विश्वभारती के लिए ग्यारहवीं योजना (2007-2012) में परिसर में जिसमें पीयर्सन मेमोरियल हॉस्पीटल स्थित है, अस्पताल बनाने के लिए रू013.37 करोड़ आबंटित की गई।मकान बना पर यह अस्पताल नहीं बन सका क्योंकि इसके लिए पब्लिक फंडिंग रोक दी गई। दूसरे शब्दों में, इमारत को करदाताओं के पैसे से बनाया गया था पर सरकारी खजाने से इतना पैसा खर्च करने के पीछे उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। नवंबर, 2018 में विश्वभारती में कार्यग्रहण करने के समय यह स्थिति थी। शुरू में मैंने अस्पताल को कार्यात्मक बनाने के लिए एमएचआरडी को आवश्यक चिकित्सा सुविधाओं के साथ एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल के लिए फंड मंज़ूर करने के लिए राजी करने का प्रयास किया।मेरा प्रयास व्यर्थ गया क्योंकि उस समय सरकार ने जो नीतियां अपनाई थीं, वे इस प्रकार के उपक्रम के पक्षधर नहीं दिखे, और इसके बजाय, अकादमिक संस्थानों द्वारा स्वयं धन जुटाने पर बल देते थे। इस विकल्प के अलावा, सरकार विकास कार्यों के लिए पीपीपी मोड को लोकप्रिय बनाना चाहती थी। हमने परियोजना के लिए धन एकत्र करने की संभावनाओं की खोज शुरू कर दी पर यह हो न सका क्योंकि यह राशि बहुत अधिक थी। इसलिए हमने पीपीपी मोड का विकल्प चुना और मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि कई सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों ने हमारे कॉल पर विचार किया। विश्वभारती की अस्पताल प्रबंधन समिति ने उन अस्पतालों के साथ कई बैठक की, जो सुपर स्पेशियलिटी देखभाल प्रदान करते थे और जिनके साथ परियोजना के लिए विचार किया जा सकता था। बातचीत हो जाने के बाद, हमने

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से संपर्क किया, जिसने इस संबंध में भारत सरकार की शर्तों का पालन करते हुए पीपीपी मोड में अस्पताल बनाने के हमारे प्रस्ताव को आसानी से स्वीकार कर लिया। यह मामला वित्त समिति की 18 जून, 2020 (वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से) की बैठक में रखा गया, जिसमें श्री सीएस कुमार, माननीय संयुक्त सचिव,एमएचआरडी और श्री जेके त्रिपाठी,माननीय संयुक्त सचिव, यूजीसी, ने भाग लिया। प्रस्ताव पर चर्चा की गई और कई संशोधनों का सुझाव दिया गया, जिसे हमने अंतिम अनुमोदन के लिए एमएचआरडी को प्रस्तुत करने से पहले शामिल किया।

एक समृद्ध अस्पताल की मांग पर पिछले समय में उतना ध्यान नहीं गया, जितना आवश्यक था। विश्वभारती में कार्यग्रहण के बाद, मैंने उचित चिकित्सा देखभाल की कमी के कारण लोगों की जान जाते देखा जो कि टाला जा सकता था। यह संभव नहीं था क्योंकि पियरसन मेमोरियल अस्पताल ऐसी आपात स्थितियों को संभालने के लिए सुसज्जित नहीं है। मैंने परिसर में एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल के निर्माण के लिए काम करने का संकल्प लिया। मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि प्रस्ताव के लिए उनके त्वरित सहयोग से, अस्पताल प्रबंधन समिति और कार्यकारी परिषद के मेरे सहयोगियों ने मेरा काम आसान कर दिया। और, ज़ाहिर है, परियोजना को निष्पादित करने में हमारी मदद करने के लिए एमएचआरडी की दिलचस्पी एक वरदान है। परियोजना के अनुकूल होने के कारण, एमएचआरडी ने मिशन को पूरा करने में और बाधाओं से बचने के लिए उचित निर्देश देकर विश्वभारती को आगे बढ़ने के लिए कहा।

समापन टिप्पणी

फिलहाल यह मेरी आखिरी संदेश है। अत: मेरी निष्कर्षपूर्ण टिप्पणी वाला यह खंड अप्रासंगिक नहीं लगता। मुख्य जानकारी जो मैंने इन दस संदेशों में दी है,विश्वविद्यालय को समझने के उद्देश्य से और साथ ही विश्वभारती के स्वरूप और कार्यप्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन लाने के लिए कुछ तरीके सुझाने के लिए, जो हमें बेहतर नैक और एनआइआरएफ रैंकिंग प्राप्त करने में मदद करेंगे। यदि विश्वविद्यालय से जुड़े शिक्षक, गैर-शिक्षण कर्मचारी, छात्र और अन्य हितधारकगण लक्ष्य प्राप्ति के लिए ईमानदारी से कदम उठाते हैं, तो हम आसानी से अपने मिशन को पूरा करेंगे। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि (क) लेखापरीक्षा आपत्तियों और (ख) एमएचआरडी के निर्देशों के कारण कौन–सा कदम उठाने के लिए मजबूर किया गया है। जब तक लेखापरीक्षा आपत्तियों को नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के मानक स्तर तक नहीं लाया जाता, तब तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय कोई भी दंडात्मक उपाय कर सकते हैं जो उन्हें सही

लगे।वह हम सब पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। प्रशासन का उद्देश्य ऐसी स्थिति से बचना है। विश्वभारती को इस गड़बड़ी से बाहर निकालने के लिए हमें साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है क्योंकि विश्वविद्यालय हमारे जीविकोपार्जन का स्रोत है और हमारे संवर्धन का साधन है। हमारा कर्तव्य है कि हम विश्वभारती को उसके पूर्व गौरव की ओर लौटने में मदद करें।

मुझे यह भी कहना है कि विश्वविद्यालय के अधिकारियों, विशेष रूप से कुलपति के खिलाफ मौखिक रूप से शिकायत करना आसान है क्योंकि विश्वविद्यालय के फैसले के लिए हमेशा वे जिम्मेदार होते हैं। यह सच है कि मेरी दृष्टि ,जहां तक विश्वविद्यालय का संबंध है ,(सहयोगियों के बीच आपसी विचार-विमर्श से) स्पष्ट है। हालाँकि, मैंने महसूस किया है कि हम में से कई ऐसे हैं जो वैचारिक और सामाजिक प्रतिबद्धताओं के अनुरूप नहीं हैं। यह निराशा की बात है कि जो लोग रबींद्रिक / आश्रमिक / प्रक्टोनिस होने का दावा करते हैं, वे उस भाषा का प्रयोग करते हैं जो उनसे अपेक्षित नहीं है। इन सम्मानित रबीन्द्रिक / आश्रमिक / प्रक्टोनिस से मेरा आग्रह है कि विश्वभारती के हित में योगदान देने के बजाय, इस तरह के अनपेक्षित व्यवहार से बचें।

इन संदेशों का उद्देश्य यह भी था कि विश्वभारती की नैक और एनआइआरएफ रैंकिंग में सुधार के लिए क्या किया जाए इस विषय पर चर्चा की जाए। हमारे सहयोगी इस दिशा में अथक परिश्रम कर रहे हैं क्योंकि एक अच्छी रैंकिंग न केवल विश्वभारती के अतीत के गौरव को वापस लाएगी, बल्कि इसके भविष्य के लिए एक ठोस आधार बनाने में भी मदद करेगी। विश्वभारती केवल उन लोगों के लिए नहीं है जो परिसर में काम कर रहे हैं, यह उन लोगों के लिए भी है जो शिक्षा के इस महान केंद्र से जीविका और बौद्धिक प्रेरणा प्राप्त करते हैं। हम एक ऐसे वातावरण को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जिसमें विश्वभारती ज्ञान के सृजन और प्रसार के लिए एक उत्कृष्ट केंद्र के रूप में फले-फूले। जैसा कि आप सभी सहमत होंगे, यह तब तक असंभव है जब तक कि हम शिक्षक, गैर-शिक्षण कर्मचारी, छात्र और अन्य हितधारक साथ मिलकर काम नहीं करते। आइए अपने अहं को त्याग दें और भावी पीढ़ी के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाएँ ताकि हम उस विरासत को आगे बढ़ा सकें जो विभिन्न क्षमताओं में विश्वभारती से जुड़ी हुई है (मैं इस 'हम' में बोलपुर के निवासियों सहित हूँ); एक विरासत जिसे महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर और गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर ने सार्वभौमिक मानवतावाद को विश्वविद्यालय - विश्वभारती के रूप में लाने की इच्छा के साथ स्थापित किया।

कोरोना वायरस का हमारी दुनिया को बर्बाद करना जारी है, मैं अपने पाठकों से सुरक्षित रहने, अपने परिवारों और पड़ोसियों तथा लाचार लोगों का ध्यान रखने और हमेशा की तरह शारीरिक रूप से दूर रहने के लिए, लेकिन सामाजिक रूप से जुड़े रहने के लिए आग्रह करता हूं।

भरोसा रखें।

बिद्युत चक्रबर्ती

२९/०८/२०२०

बिद्युत चक्रबर्ती

विश्वभारती
शान्तिनिकेतन

Vice-Chancellor
Visva-Bharati
Santiniketan
West Bengal-731235
India